दिनांक :- 21-05-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फारूक आज़म (अतिथी शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम खंड (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- सात

पत्र :- प्रथम

अध्याय :- धर्म

प्रथम सम्मेलन —

322-298 ई० पूर्व (चन्द्रगुप्त मौर्य के काल में) में पाटलीपुत्र में आयोजित किया गया। अध्यक्ष स्थूल भद्र थे।

कार्य —

ग्यारह अंगो का प्रणयन 12वां अंग किसी को याद नहीं था। इस सम्मेलन को पाटलिपुत्र वाचना कहा जाता है। इसी सम्मेलन के पश्चात जैन धर्म का विभाजन श्वेतांबर तथा दिगंबर सम्प्रदाय में हो गया।

दूसरा सम्मेलन :- 300-131 A.D. स्थान - मथुरा, अध्यक्ष : आर्य स्कंदिल

इस माथुरी वाचना के नाम से जाना जाता है।

तीसरा सम्मेलन : 453 ई० स्थान - वल्लभी (गुजरात) अध्यक्ष देवर्धी क्षमाश्रवण।

कार्य →

इस सम्मेलन में सभी आगम साहित्य को लिपिबद्ध किया। किया गया। यहाँ ग्यारह अंगों को भी लिपिबद्ध किया गया तथा 12वां अंग दृष्टिवाद को नष्ट मान लिया गया।

अन्य जैन ग्रंथ →

भगवतीसूत्र :- इस ग्रंथ में 16 महाजनपदों का उल्लेख मिलता है तथा महावीर के जीवन पर भी कुछ प्रकाश पड़ता है।

नयाधम्मकहासुत्त :- इसमें महावीर की शिक्षाओं का संग्रह है।

कुवलयमाला : लेखक : उद्योतन सूरी

इस ग्रंथ में हूण नरेश तोरमाण की जानकारी मिलती है।

भद्रबाहु चरित - इससे चंद्रगुप्त मौर्य के राज्यकाल की

Scanned with CamScanner

की घटनाओ पर प्रकाश पड़ता है।

उवासगदसाओ : इस जैन ग्रंथ मे उपासको के जीवन संबंधी नियम एवं आचरण का उल्लेख है।

कल्पसूत्र :- लेखक : भद्रबाहु, अत्यंत प्रसिद्ध पुस्तक

अनेकांत विजय, धर्मबिंदु हरभिद्र सूरीकृत —

निर्युक्ति शब्द से जैन आगम साहित्य का निर्देश होता है

लोक विभंग : लेखक : सर्वनंदी (1458) ई०

अन्य ग्रंथ : वसुदेवहुंडी बृहदकथासूत्र भाष्य, आवश्यक चूर्णि लिका पुराण, कथाकोष प्रशति संग्रह

जैन धर्म का प्रसार :-

कर्नाटक में इस धर्म का पुरातात्विक साक्ष्य तीसरी सदी ई० से प्राप्त होता है। माना जाता है कि 5वी सदी से कर्नाटक में जैन मठ स्थापित होने लगे जिसे बसादि कहा जाता था।

चौथी सदी इस्वी पूर्व में इसका प्रसार कलिंग एवं उड़ीसा क्षेत्र में हुआ।

दूसरी सदी या पहली सदी ई० पूर्व में इसका प्रसार तमिल नाडु में हुआ।

मथुरा में भी जैन धर्म का प्रसार हुआ। यह तथ्य एक जैन मंदिर के प्राप्त अवशेषों से ज्ञात होता है। इसकी पुष्टि कल्पसूत्र तथा अन्यविशवली से भी होता है।

जैन मुनि कालकाचार्य की कथा से ज्ञात होता है कि उज्जैन क्षेत्र में जैन धर्म का प्रसार पहली सदी में हुआ। पश्चिम भारत में ढांक की गुफाओं में ऋषभदेव, पार्श्व, महावीर आदि जैन तीर्थंकरों की मूर्तियाँ प्राप्त हुई है।

पश्चिम भारत में ढांक की गुफाओं दिगंबर सम्प्रदाय दक्षिण भारत विशेषतः कर्नाटक उत्तर भारत एवं मध्य भारत में प्रचलित था। मणिमेखलाई में अधिकांश दिगंबर साधु का उल्लेख है। वनवासी के कदंब राजा में विभिन्न जैन सम्प्रदाय के लोग रहते थे।

जैसे दिगंबर निग्रंथ, यापनीय, कुरचक तथा श्वेतपट, सुदूर दक्षिण मे जैन सम्प्रदाय ने एक मूल संघ बना लिया था।

श्वेतांबर सम्प्रदाय का गुजरात, राजस्थान, मध्य भारत पंजाब तथा हरियाणा में प्रसार था।

चीनी यात्री ह्वेनसांग के अनुसार श्वेतांबर एवं दिगंबर सम्प्रदाय के साधु तक्षशिला से पूरब मे विपला तक पाये जाते है और पूरब में पुण्ड्रवर्द्धन तथा समतट (दक्षिण पूर्वी बंगाल) मे निर्ग्रंथ काफी संख्या मे मिलते है अधिकांश जैन व्यापार तथा उद्योग मे लगे हुए थे किंतु महाराष्ट्र एवं कर्नाटक मे कुछ जैन खेती भी करते थे। यद्यपि जैन धर्म मे कृषि कार्य की निंदा की गई है तथा सामान्य जैन के लिये तिरस्कृत कर्म बताया गया है।

जैन धर्म के संरक्षक शासक ———

हर्यक वंश (मगध): मगध नरेश अजातशत्रु तथा उसके पुत्र उदायिन !

चेदिवंश (कलिंग): कलिंग शासक खारवेल (प्रथम सदी ई०)

कार्य: उदयगिरि की पहाड़ियों पर भिक्षु आवास बनवाये।

गुर्जर प्रतिहार (राजपुताना): प्रतिहार नरेश भोज द्वारा एक जैन मंदिर बनवाया गया। नागभट्ट द्वितीय तथा वत्सराज द्वारा कन्नौज में एक जैन मंदिर बनवाया गया।

गुजरात के चालुक्य :—

सिद्धराज तथा कुमारपाल जैन धर्मावलंबी शासक थे।

कुमारपाल के दरबार में हेमचंद्र नामक जैन विद्वान रहते थे। उसी के लेखन के आधार पर जैन धर्म से संबंधित तिथियां स्पष्ट की जाती हैं। हेमचन्द्र ने ही अपभ्रंश भाषा को व्याकरण बद्ध किया है।

आबू पर्वत पर दिलवाड़ा का जैन मंदिर बनवाया !

मालवा के परमार शासकों ने धनेश्वर सूरि, धनपाल

तथा शांति सूरी जैसे प्रसिद्ध विद्वानों को संरक्षण दिया। 5 वी सदी से 12वी सदी तक दक्षिण भारत के गंग, कदम्ब तथा राष्ट्रकूट एवं चालुक्य शासकों ने जैन धर्म को संरक्षण दिया।

राष्ट्रकूट शासकों ने जिनसेन तथा गुणभद्र को संरक्षण दिया। राष्ट्रकूट शासक अमोघवर्ष स्वयं भी जैन था तथा उसने रत्नमालिका नामक ग्रंथ की रचना की बनवासी मे एक जैन मंदिर बनवाय।

चालुक्य शासक पुलकेशिन का मंत्री रविकीर्ति जैन धर्मानुयायी था। उसने एक जैन मंदिर तथा बादामी की गुफाओ मे जैन तीर्थंकर की मूर्ति स्थापित की। चौहान नरेश पृथ्वीराज द्वारा रणथम्बौर मे एक जैन मंदिर का शिखर बनवाया गया। वह जैन विद्वान जिनपति राज धर्म घोष सूरि का आश्रयदाता था।

Scanned with CamScanner